भारतीय वानिकी अनुसंधान
एवं शिक्षा परिषद्

वानिकी समाचार

वर्ष 11 अंक 2
फरवरी 2019

अनुक्रमणिका

01 अनुसंधान निष्कर्ष
02 परामर्शी
02 वृक्ष उत्पादक मेला/किसान मेला
02 कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठकें
03 प्रशिक्षण कार्यक्रम
07 समझौता ज्ञापन
06 प्रकृति कार्यक्रम
07 जागरूकता एवं प्रदर्शन कार्यक्रम
06 पुरस्कार
07 मानव संसाधन समाचार
07 आकाशवाणी/दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना
07 समझौता ज्ञापन

अनुसंधान निष्कर्ष

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर :

राजस्थान में, माऊण्ट आबु के राज भवन क्षेत्रों में जैविक विविधता पर किया गया अध्ययन *मैंगीफेरा इंडिका* के पश्चात *फोनिक्स डेक्टायलिफेरा* की बहुलता (यथा उच्चतम महत्ता मान सूचकांक) को इंगित करता है। सबसे कम बहुल वृक्ष प्रजातियां *ब्यूटिआ मोनोस्पर्मा, सिथारेएक्सायलम सबस्ट्रेटम, क्रेटेवा रिलिजिओसा, इरिबोट्रिया जेपोनिका, जूनिपेरस कोम्मयूनिस, लेन्निए कोरोमेन्डिलेका* तथा *माइकेलिआ चैम्पक्का* हैं ।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून :

- हरियाणा में जिलों, रोहतक, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी तथा झज्जर से विभिन्न वानिकी वृक्षों : *कैसिया फिस्टुला, टैक्टोना ग्रैण्डिस* तथा *एकेशिया लेटीफोलिआ*, से लेपीडोप्टेरस लार्वा/कोकून के 6 नमूने एकत्रित किए गए जिनका *एपनटेलस* प्रजा. के उद्‌गम हेतु पालन जारी रहा तथा कुछ अज्ञात लेपीडोप्टेरस लार्वा भी पाले गए। एकत्रित नमूनों से 8 प्रतिदर्श विभेदित किए गए। परियोजना ''उत्तराखण्ड तथा हरियाणा से लार्वल परजीव्याभ *एपनटेलस* प्रजा. (हाइमेनोप्टेरा : ब्रैकोनिडी) की वर्गिकी तथा मेजबान रेंज पर अध्ययन'' के अंतर्गत *एपेनटेलस* प्रजा. का स्लाइड निर्माण, छायाचित्रण तथा प्रजाति चिन्हीकरण प्रगति में है ।
- अंड परजीव्याभों की जाँच हेतु हरियाणा में विभिन्न जिलों : रोहतक, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी व झज्जर तथा उत्तर प्रदेश के बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, गोंडा तथा बस्ती जिलों के विभिन्न स्थलों से 80 कीट अंड नमूने एकत्रित किए गए। एकत्रित नमूनों से 50 अंड परजीव्याभ विभेदित किए गए। विभिन्न वानिकी वृक्षों : *एकेशिया लेटीफोलिआ, टैक्टोना ग्रैण्डिस, मैल्लोटस फिलिप्पेनसिस, कैसिया फिस्टुला, होलोप्टेलिआ इंटेग्रिफोलिआ* से कीट अंड के 19 नमूने एकत्रित किए गए। परियोजना ''उत्तर भारत (हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड) से हाइमेनोप्ट्रेन अंड परजीव्याभों की विविधता तथा वर्गिकी पर अध्ययन'' के अंतर्गत स्लाइड निर्माण तथा छायाचित्रण प्रगति में है ।
- सर्वेक्षण के दौरान बन ओक वृक्षों से लेपीडोप्टेरा की 4 प्रजातियों के लार्वा को एकत्रित कर, जीवन इतिहास अध्ययनों के लिए प्रयोगशाला में पाला गया उनमें से 18 शीत–निष्क्रियता के अंतर्गत प्यूपा चरणों में हैं तथा लाइमैनट्रिड एवं जिओमिट्रिड शलभों की 2 प्रजातियों का उद्‌भव हुआ।
- 650 प्रजातियों का डिजिटलीकरण किया गया – डी.एस.एल.आर. के साथ 270 का (दराज संख्या 35,37,38,41,47,54,65,67,101,102,105,106,115,122,123,124–26 में) तथा स्टीरियो जूम सूक्ष्मदर्शी के साथ 380 का (दराज संख्या 115,122–127 में) एवं इन प्रजातियों के लगभग 1200 छायाचित्रों को संपादित तथा भण्डारित किया गया। परियोजना ''वन अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय वन कीट संग्रह का डिजीटलीकरण एवं संवृद्धि, चरण–II, (सूक्ष्म कीट)'' के अंतर्गत आंकड़ा–संचय में आंकड़े संग्रहीत करने वाली संपादित प्रजातियों के लिए आंकड़ा–संचय को अद्यतन किया गया ।
- ऊपरी यमुना वनों में, 2017–18 पश्च वनाग्नि अवधि के दौरान दग्ध तथा अदग्ध चीड़ पाइन वनों में पोषक तत्वों पर वनाग्नि के प्रभाव का अध्ययन यह संकेत देता है कि ऊपरी यमुना वनों में अदग्ध स्थल की तुलना में दग्ध स्थल में जल अवधारण क्षमता, विद्युत चालकता तथा मृदा जैविक कार्बन में वृद्धि हुई है। उपलब्ध पोषक तत्वों यथा नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, तथा पोटैशियम ने भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति प्रदर्शित की ।
- उत्तराखण्ड के विभिन्न वन प्रकारों में मृदा पोषक–तत्व भण्डारों पर अध्ययन से ज्ञात हुआ कि बाँज ओक वनों की तुलना में खारसु ओक, चीड़ पाइन वनों की मृदा का pH अधिक अम्लीय है। मृदा गहराइयों के साथ SOC तथा उपलब्ध पोषक तत्वों (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, तथा पोटैशियम) में कमीं हुई तथा यह बाँज वनों में उच्च था, इसके बाद खारसु ओक वनों तथा चीड़ पाइन वनों में था ।
- *कैसिया टोरा* भ्रूणपोष क्लोरोफॉर्म निष्कर्ष की एंथ्रा क्वनोन उपस्थिति हेतु एच.पी.एल.सी. द्वारा मात्रात्मक विश्लेषण किया गया। इसने इमोडिन, क्लोसोफिनिक अम्ल तथा रिहिन की उपस्थिति को इंगित किया ।
- नाग टिब्बा, टिहरी तथा कुंजाखड़क, नैनीताल, उत्तराखण्ड के वनों में उगी *क्वर्कस सेमिकार्पिफोलिया* (QS-21 तथा

QS-23) की दो आबादियों को उनके पर्णों में कुल फिनोलिक मात्रा निर्धारण हेतु पहली बार लक्षण–वर्णित किया गया ।

- अरूणाचल प्रदेश से एकत्रित *वैलेरिआना जटामंसी* की दो आबादियों (VAJ-10-PT तथा VAJ-10-BT) को उनके प्रकंदों में वाष्पशील घटकों के निर्धारण हेतु पहली बार लक्षण–वर्णित किया गया ।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

•कीट प्रजातियों के 24 प्रतिदर्शों का प्रजाति स्तर तक चिन्हीकरण, को व.अ.सं., देहरादून में अधिप्रमाणित किया गया। उनमें से 15 कोलिओप्टेरा से संबंधित हैं, 1 लेपीडोप्टेरा से संबंधित हैं तथा 1 हाइमेनोप्टेरा से संबंधित है।

•किन्नौर जिले के विभिन्न भागों से एकत्रित 35 वन्य प्रजातियों की पहचान को भी व.अ.सं., देहरादून में अधिप्रमाणित किया गया। चिह्नित प्रजातियां 19 कुलों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

परामर्शी

टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कार्पोरेशन इण्डिया लि.; हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लि.; कर्नाटक स्टेट ऑफिशियल एथोरिटी; उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम लिमिटेड; प.व.ज.प.मं., भारत सरकार, नई दिल्ली; कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता; एन.टी.पी.सी. लि., नोएडा तथा एन.एम.डी.सी.लि., हैदराबाद द्वारा प्रदत्त 9 परामर्शी परियोजनाओं पर भा.वा.अ.शि.प., देहरादून वर्तमान में कार्य कर रहा है।

वृक्ष उत्पादक मेला/किसान मेला

संस्थान	आयोजित/प्रतिभाग	समयावधि	स्थान
व.उ.सं., राँची	किसान मेला सह प्रदर्शनी	6 फरवरी 2019	सी.टी.आर.टी.आई., नागरी राँची
	कृषि कुम्भ मेला	9–11 फरवरी 2019	मोतीहारी, बिहार
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	वृक्ष उत्पादक मेला	13 फरवरी 2019	ए.एस. महल, तिरूवन्नामलाई
का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरू	द्वितीय उद्यम समागम	14–16 फरवरी 2019	पुलिस मैदान कन्नूर, केरल

तिरूवन्नामलाई, कोयम्बटूर में वृक्ष उत्पादक मेला

कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठकें

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर		
1.	पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन : परिप्रेक्ष्य, सम्भावनाएं एवं अंतर्दृष्टियां	28 फरवरी 2019	व.आ.वृ.प्र.सं. के अधिकारी, वैज्ञानिक, तकनीकी कार्मिक तथा अनुसंधान अध्येता

	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
2.	जीविका सुधार में कृषि वानिकी तथा काष्ठ प्रौद्योगिकी की भूमिका	1 फरवरी 2019	कृषक, सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठन, वन विभाग, स्वयं सहायता समूह, काष्ठ उद्योग
	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर		
3.	वानिकी अनुसंधान में बौद्धिक संपदा जागरूकता	20 फरवरी 2019	वैज्ञानिक/अधिकारी/तकनीकी कार्मिक/अनुसंधान अध्येता
	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला		
4.	हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू कश्मीर में शीत मरूस्थलों के निम्नीकृत क्षेत्रों का पारि–पुनरूद्धार	22 फरवरी 2019	वैज्ञानिक, अधिकारी, अनुसंधान तथा तकनीकी कार्मिक

हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू कश्मीर में शीत मरूस्थलों के निम्नीकृत क्षेत्रों का पारि–पुनरूद्धार पर मासिक संगोष्ठी

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
1.	वन कीटविज्ञान एवं नाशी–कीट नियंत्रण	14 फरवरी – 20 मार्च 2019	-
2.	अकाष्ठ वन उत्पादों एवं औषधीय पादपों का मूल्य वर्धन एवं विपणन	4–19 फरवरी 2019	भारत के विभिन्न राज्यों से 13 प्रतिभागी
	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरू		
3.	काष्ठ रक्षण	4–8 फरवरी 2019	नौसेना गोदीवाड़ा, मुम्बई एवं विशाखापट्नम तथा वॉर ओवरसीइंग टीम,मुम्बई
4.	चन्दनकाष्ठ : बीज हस्तन, पौधशाला एवं रोपणी प्रौद्योगिकी	18–22 फरवरी 2019	विभिन्न राज्यों से कृषक तथा गैर सरकारी संगठन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

5.	हरित कौशल विकास कार्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत लघु वानस्पतिक उद्यान	7 जनवरी से 8 फरवरी 2019	बेरोजगार युवक एवं छात्र
6.	कृषि वानिकी तथा इसका प्रबंधन	19,20 तथा 21 फरवरी 2019	महिला कृषक, गैरसरकारी संगठन,बेरोजगार युवक, कृषक,शिक्षाविद्
7.	हरित कौशल विकास कार्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत वन कीट विज्ञान	29 जनवरी से 28 फरवरी 2019	बेरोजगार युवक एवं छात्र

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

8.	हरित कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत अपशिष्ट प्रबंधन	4 फरवरी 2019	विज्ञान स्नातक
9.	वानिकी में नवीन प्रौद्योगिकी	12 से 14 फरवरी 2019	ग्राम वन रक्षण एवं प्रबंधन समिति के सदस्य तथा राज्य वन विभाग के क्षेत्र कार्यकर्ता
10.	लघु वानस्पतिक उद्यान का प्रबंधन	15 जनवरी से 13 फरवरी 2019	निजी वन पौधशाला खोलने के इच्छुक प्रशिक्षु उम्मीदवार

लघु वानस्पतिक उद्यान के प्रबंधन पर प्रशिक्षण

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

11.	हरित कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत बाँस हस्तशिल्प	11 फरवरी से 23 मार्च 2019	-
12.	हरित कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत बाँस का प्रवर्धन एवं प्रबंधन	25 फरवरी से 23 मार्च 2019	-
13.	वन विज्ञान केन्द्र के अंतर्गत बाँस प्रवर्धन एवं पौधशाला प्रबंधन	26 तथा 27 फरवरी 2019	-

14.	बाँस किसान पौधशालाओं का विकास एवं प्रबंधन	27 तथा 28 फरवरी 2019	-
15.	सामुदायिक उपक्रमों के प्रसार हेतु बाँस हस्तशिल्प पर कौशल विकास	27 तथा 28 फरवरी 2019	-

बाँस प्रवर्धन एवं पौधशाला प्रबंधन पर प्रशिक्षण

बाँस किसान पौधशालाओं के विकास एवं प्रबंधन पर प्रशिक्षण

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

16.	महत्वपूर्ण उच्च मूल्यित शीतोष्ण औषधीय पादपों की कृषि	19 फरवरी 2019	हितधारक

महत्वपूर्ण उच्च मूल्यित शीतोष्ण औषधीय पादपों की कृषि पर प्रशिक्षण

वन उत्पादकता संस्थान, राँची

17.	बाँस पौधशाला एवं प्रबंधन	4–8 फरवरी 2019	राज्य वन विभाग, झारखण्ड तथा ओडिशा के वन रक्षकं
18.	बाँस प्रवर्धन एवं प्रबंधन	12 फरवरी – 29 मार्च 2019	छात्र, कृषक

वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद

19.	आंध्र प्रदेश कार्य योजना का निर्माण	5–8 फरवरी 2019	पदेरू एवं विशाखापट्नम प्रभागों के डी.एफ.ओ. तथा एफ.आर.ओ.
20.	आंध्र प्रदेश कार्य योजना का निर्माण तथा कार्बन पर आंकड़ों का एकत्रण	11–15 फरवरी 2019	गुण्टुर एवं कृष्णा प्रभागों के डी.एफ.ओ. तथा एफ.आर.ओ.

प्रकृति कार्यक्रम

- का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरू ने माह के दौरान प्रकृति के अंतर्गत निम्नांकित कार्यक्रम आयोजित किए :
  - 4 फरवरी 2019 को केन्द्रीय विद्यालय, मल्लेश्वरम, बेंगलुरू से कक्षा 6,7 तथा 8वीं के 200 छात्रों हेतु ।
  - 5 तथा 6 फरवरी 2019 को केन्द्रीय विद्यालय, मल्लेश्वरम, बेंगलुरू के कक्षा 7वीं, 8वीं, 9वीं तथा 11 वीं के 200 छात्रों हेतु ।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर ने 7 फरवरी 2019 को ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, बरूखी, जिला छिंदवाड़ा के छात्रों के लिए एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया।
- शु.व.अ.सं., ने 27 फरवरी 2019 को केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा 1 से 11 तक के 985 छात्रों के लिए 'वन एवं पर्यावरण संरक्षण' विषय पर एक व्याख्यान आयोजित किया (35 शिक्षकों ने भी कार्यक्रम में प्रतिभाग किया)। शु.व.अ.सं., जोधपुर के अनुसंधान क्रियाकलापों को पोस्टरों, वन उत्पादों, शु.व.अ.सं. पौधशाला में विकसित नवांकुरों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट के अनुसंधान एवं विकास क्रियाकलापों यथा बाँस कृषि, प्रवर्धन, पौधशाला प्रबंधन, मूल्य वर्धन एवं बाँस परिरक्षण तकनीकियों, जैव–प्रौद्योगिकी एवं ऊतक संवर्धन, लाख कृषि, वानस्पतिक उद्यान, और्चिडेरियम कृमि खाद आदि पर 12 फरवरी 2019 को ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें जवाहर नवोदय विद्यालय, जोरहाट के छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया।
- व.व.अ.सं., जोरहाट के अनुसंधान एवं विकास क्रियाकलापों यथा बाँस कृषि, प्रवर्धन, पौधशाला प्रबंधन, मूल्य वर्धन एवं बाँस परिरक्षण तकनीकियों, जैव–प्रौद्योगिकी एवं ऊतक संवर्धन, लाख कृषि, वानस्पतिक उद्यान, और्चिडेरियम, कृमि खाद आदि पर 26 फरवरी 2019 को ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, ओ.एन.जी.सी. के छात्रों को प्रदर्शित किए गए।
- व.उ.सं.,राँची ने 18 फरवरी 2019 को 'प्रकृति' के अंतर्गत जवाहर नवोदय विद्यालय, बोंगा, हजारीबाग में ''पौधशाला अनुरक्षण'' पर एकदिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया । 200 शिक्षकों एवं छात्रों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

पुरस्कार

- सुश्री रेखा देवरानी को 26 से 28 फरवरी 2019, विज्ञान धाम, यूकॉस्ट, झाझरा, देहरादून में 13 वें उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस में प्रस्तुत उनके शोधपत्र, ''पोपलर तथा लेमनग्रास के जैवनिष्कर्षों से फिनोलिक एण्टीआक्सीडेण्ट का इन्जाइम सहायतार्थ निष्कर्षण'' के लिए 'यंग साइंटिस्ट अवार्ड' से अलंकृत किया गया जिसके रचयिता देवरानी, रेखा, सिंह राकेश; वार्ष्णेय, वी.के. तथा नेगी,विपुल हैं ।
- सुश्री रिसिका गुलेरिया को 26 से 28 फरवरी 2019 को विज्ञान धाम, यूकॉस्ट, झाझरा, देहरादून में 13 वें उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस में मौखिक श्रेणी में उनके प्रस्तुतीकरण ''*पाइनस राक्सवर्घाई* सूचिकाएं : एंटीवाइरल प्रिकर्सर स्कीमिक एसिड का समकालिक स्रोत'' के लिए 'यंग साइंटिस्ट अवार्ड' से अलंकृत किया गया जिसके रचयिता विनीत कुमार, रिसिका गुलेरिया तथा प्रदीप शर्मा हैं ।
- कर्नाटक के उप–मुख्यमंत्री माननीय श्री जी. परमेश्वर ने 25 फरवरी 2019 को जे.एन. टाटा ऑडिटोरियम में सैण्डल सोसाइटी ऑफ कर्नाटका द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. पंकज के. अग्रवाल, वैज्ञानिक–'जी' तथा प्रमुख, डब्ल्यू.पी. प्रभाग को कर्नाटक के ग्रामीण भागों में चन्दनकाष्ठ के बारे में जागरूकता सृजित करने के लिए 'आउटरीच पुरस्कार' से अलंकृत किया।
- डॉ. शिनी के.एस., पोस्ट डॉक्टोरल फेलो को पश्च डॉक्टोरल (पी.डी.एफ.) श्रेणी में ''काष्ठ रक्षण के लिए नारियल के आवरण का तेल'' पर उन्नत लेखन कौशल हेतु वाक–दक्षता अनुसंधान (आर्टिकुलेटिंग रिसर्च) पुरस्कार 2018 प्रदान किया। इस पुरस्कार के साथ रु. 10,000/– तथा सराहना पत्र प्रदान किया जाता है।

जागरूकता एवं प्रदर्शन कार्यक्रम

- हि.व.अ.सं, शिमला ने 28 फरवरी 2019 को भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वित्त पोषित परियोजना, शीर्षक ''चीड़ पाइन वनों में पादप विविधता एवं मृदा गुणों पर नियंत्रित दहन का प्रभाव विश्लेषण'' के अंतर्गत चीड़ पाइन वनों में वनाग्नि की घटनाओं में कमी करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 28 स्थानीय ग्रामीणों तथा कसौली गदखाल, तहसील कसौली, जिला सोलन के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया ।
- व.उ.सं.,राँची ने 13 फरवरी 2019 को हजारीबाग जिले की ग्राम वन समिति के लिए ''एन.टी.एफ.पी. कृषि तकनीक'' तथा जैवप्रौद्योगिकी विभाग, राँची विमैन्स कॉलेज, राँची के छात्रों को ''औषधीय पादप एवं वानिकी अनुसंधान क्रियाकलापों'' पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया ।

आकाशवाणी/दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना

कार्यक्रम विषयक	चैनल	दिनांक
वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
अगरबत्ती निर्माण में जिगत का महत्व – व.अ.सं. का योगदान	आकाशवाणी	27 फरवरी 2019
वन उत्पादकता संस्थान, राँची		
वानिकी अनुसंधान की भूमिका तथा अवरोध	दूरदर्शन, राँची	16 फरवरी 2019

विविध

संस्थान	विशेष दिन/विषयवस्तु	तिथि
व.जै.सं., हैदराबाद	विश्व आंर्द्रभूमि दिवस	2 फरवरी 2019
व.व.अ.सं., जोरहाट	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2019	28 फरवरी 2019

समझौता ज्ञापन

- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 12 फरवरी 2019 को वन विज्ञान केन्द्र, जगतसुख, मनाली, जिला कुल्लू (हि.प्र.) के रख–रखाव हेतु हिमाचल प्रदेश वन विभाग के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया ।

मानव संसाधन समाचार

नाम	नियुक्ति की तिथि
श्री प्रेम लाल, अवर सचिव, भा.व.अ.शि.प.	21 फरवरी 2019
श्री सरदार सिंह चौहान, अवर सचिव, भा.व.अ.शि.प.	21 फरवरी 2019
(तदर्थ आधार पर)	
श्री जगदीश सरन सक्सेना, अवर सचिव, व.अ.सं.	21 फरवरी 2019

नाम	नियुक्ति की तिथि
श्रीमती रेखा रानी, अवर सचिव, व.अ.सं.	21 फरवरी 2019
श्रीमती सुमन कौशल, अवर सचिव, हि.व.अ.सं.	21 फरवरी 2019
श्री राकेश कुमार भण्डारी, अवर सचिव, व.अ.सं.	21 फरवरी 2019
श्री हेमन्त गगल, अवर सचिव, शु.व.अ.सं.	21 फरवरी 2019

संरक्षकः
डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक

प्रत्याख्यान
श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), मानद सम्पादक
श्री रमाकान्त मिश्र, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग),सदस्य

प्रत्याख्यान
केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री, संपादक मंडलके विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
यहाँ प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।